पुण्ना International School
Shree Swaminarayan Gurukul, Zundal

Std-VI Subject-Hindi

PERIODIC ASSESSMENT- 3 (2020-21)

(अपठित-विभाग)

प्र-१ अपठित गदयांश और पदयांश को पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर लिखिए।

1) बातचीत करते समय हमें शब्दों के चयन पर विशेष ध्यान देना चाहिए, क्योंकि सम्मानजनक शब्द व्यक्ति को उदात्त एवं महान बनाते हैं। बातचीत को सुगम एवं प्रभावशाली बनाने के लिए सदैव प्रचलित भाषा का ही प्रयोग करना चाहिए। अत्यंत साहित्यिक एवं क्लिष्ट भाषा के प्रयोग से कहीं ऐसा न हो कि हमारा व्यक्तित्व चोट खा जाए। बातचीत में केवल विचारों का ही आदानप्रदान नहीं होता, बल्कि व्यक्तित्व का भी आदान-प्रदान होता है। अतः शिक्षक वर्ग को शब्दों का चयन सोच-समझकर करना चाहिए। शिक्षक वास्तव में एक अच्छा अभिनेता होता है, जो अपने व्यक्तित्व, शैली, बोलचाल और हावभाव से विद्यार्थियों का ध्यान अपनी ओर आकर्षित करता है और उन पर अपनी छाप छोड़ता है।

(क) शिक्षक होता है

(i) राजनेता (ii) साहित्यकार **(iii) अभिनेता** (iv) कवि

(ख) बातचीत में किस प्रकार की भाषा का प्रयोग करना चाहिए?

- क्लिष्ट

(ग) शिक्षक वर्ग को बोलना चाहिए?

- सोच-समझकर

(घ) बातचीत में आदान-प्रदान होता है-

(i) केवल विचारों का (ii) केवल भाषा का (ii) केवल व्यक्तित्व का **(iv) विचारों एवं व्यक्तित्व**

(ङ) उपर्युक्त गद्यांश का उचित शीर्षक है|

- शब्दों का चयन

2) संसार में शांति, व्यवस्था और सद्भावना के प्रसार के लिए बुद्ध, ईसा मसीह, मुहम्मद चैतन्य, नानक आदि महापुरुषों ने धर्म के माध्यम से मनुष्य को परम कल्याण के पथ का निर्देश किया, किंतु बाद में यही धर्म मनुष्य के हाथ में एक अस्त्र बन गया। धर्म के नाम पर पृथ्वी पर जितना रक्तपात हुआ उतना और किसी कारण से नहीं। पर धीरे-धीरे मनुष्य अपनी शुभ बुधि से धर्म के कारण होने वाले अनर्थ को समझने लग गया है। भौगोलिक सीमा और धार्मिक विश्वासजनित भेदभाव अब धरती से मिटते जा रहे हैं। विज्ञान की प्रगति तथा संचार के साधनों में वृद्धि के कारण देशों की दूरियाँ कम हो गई हैं। इसके कारण मानव-मानव में घृणा, ईष्र्या वैमनस्य कटुता में कमी नहीं आई। मानवीय मूल्यों के महत्त्व के प्रति जागरूकता उत्पन्न करने का एकमात्र साधन है शिक्षा का व्यापक प्रसार।

(क) मनुष्य अधर्म के कारण होने वाले अनर्थ को कैसे समझने लगा है?

- अपनी शुभ बुधि से

(ख) विज्ञान की प्रगति और संचार के साधनों की वृद्धि का परिणाम क्या हुआ है?

- देशों की दूरियाँ कम हुई है।

(ग) देश में आज भी कौन-सी समस्या है?

- वर्ण-भेद की

(घ) किस कारण से देश में मानव के बीच, घृणा, ईष्र्या, वैमनस्यता एवं कटुता में कमी नहीं आई है?

- वर्ण-भेद के कारण

(ङ) मानवीय मूल्यों के महत्त्व के प्रति जागरूकता उत्पन्न करने का एकमात्र साधन है?

- शिक्षा का व्यापक प्रसार

3) छुट्टी का घंटा बजते ही स्कूलों से
निकल-निकल आते हैं जीते-जागते बच्चे,
हँसते-गाते चल देते हैं पथ पर ऐसे
जैसे सास्वत भाव वही हो कविताओं के
बंद किताबों से बाहर छंदों से निकले
देश-काल में व्याप रही है जिनकी गरिमा।
मैं निहारता हूँ उनको फिर-फिर अपने को
और भूल जाता हूँ अपनी क्षीण आयु को|

(क) बच्चों के चेहरों पर ताजगी और खिलखिलाहट कब आ जाती है?

- छुट्टी का घंटा बजते ही

(ख) स्कूल की सीमा से बाहर निकले बच्चों की तुलना किससे की गई है?

- जीते-जागते व हँसते-गाते लोगों से

(ग) कवि को अपना बचपन कब याद आता है?

- बच्चों को जीते-जागते देखकर

(घ) बच्चों को हँसते-गाते देखकर कवि क्या अनुभव करता है?

- अपनी ढलती आयु को भूल जाता है

(साहित्य-विभाग)

प्र-1 एक-एक वाक्य में उत्तर लिखिए।

1- महल में खुशी का कारण क्या था?

उत्तर- विवाह के बाद रानी लक्ष्मीबाई का महल में आना खुशी का प्रमुख कारण था।

2- ब्रिटिश सरकार ने झाँसी के दुर्ग पर झंडा क्यों फहराया?

उत्तर- क्योंकि वहाँ के राजा नि:संतान मृत्यु को प्राप्त हुए।

3-लेखिका के कानों में किसके मधुर स्वर गूंजने लगते थे?

उत्तर- लेखिका के कानों में चिड़ियों के मधुर स्वर गूंजने लगते थे।

4- लेखिका को प्रकृति के जादू का अहसास कब होता है?

उत्तर- फूलों की पंखुड़ियों की मखमली सतह छूने और उनकी घुमावदार बनावट महसूस करने से लेखिका को प्रकृति के जादू का अहसास होता है।

5-इस दुनिया के लोग कैसे हैं?

उत्तर- इस दुनिया के अधिकांश लोग संवेदनहीन हैं। वे अपनी क्षमताओं की कद्र करना नहीं जानते।

6-हेलेन केलर अपने मित्रों की परीक्षा क्यों लेती है?

उत्तर- हेलेन केलर अपने मित्रों की परीक्षा यह परखने के लिए लेती है कि वे क्या देखते हैं।

7-नागराजन के अलबम के हिट हो जाने के बाद राजप्पा के मन की क्या दशा हुई?

उत्तर:- नागराजन के अलबम के हिट हो जाने के बाद राजप्पा मन ही मन कुढ़ा करता था। उसे अब स्कूल जाना भी अच्छा नहीं लगता था उसे जलन हो रही थी।

8– राजप्पा ने नागराजन का टिकट-अलबम अँगीठी में क्यों डाल दिया?
उत्तर:- अपनी चोरी पकड़े जाने के डर के मारे राजप्पा ने नागराजन का टिकट-अलबम अँगीठी में डाल दिया।

(रामबाल– कथा)

प्रश्न- राम ने लक्ष्मण को क्या आदेश दिया था?

उत्तर- राम ने लक्ष्मण को उनके लौटने तक सीता की रक्षा का आदेश दिया था ।

प्रश्न- सीता क्या सुनकर विचलित हो गई?

उत्तर - सीता मायावी पुकार सुनकर विचलित हो गई ।

प्रश्न- लक्ष्मण के जाते ही कौन आ पहुँचा?

उत्तर - लक्ष्मण के जाते ही रावण आ पहुँचा ।

प्रश्न- रावण किस वेश में आया था?

उत्तर - रावण तपस्वियों के वेश में आया था ।

प्रश्न- रावण ने सीता के किन गुणों की प्रशंसा की?

उत्तर - रावण ने सीता के स्वरुप, संस्कार और साहस की प्रशंसा की ।

प्रश्न- रावण सीता को लेकर सीधे कहाँ गया?

उत्तर - रावण सीता को लेकर सीधे अपने अंतःपुर में गया।

प्रश्न- रथ के पास राम को सीता की कौन सी वस्तु मिली?

उत्तर - राम को रथ के पास पुष्पमाला मिली जो सीता ने वेणी में गूँथ रखा था।

प्रश्न- जटायु की अंतिम क्रिया किसने की?

उत्तर - जटायु की अंतिम क्रिया राम ने की।

प्रश्न- कबंध ने राम से क्या आग्रह किया?

उत्तर - कबंध ने राम से आग्रह किया कि उसका अंतिम संस्कार राम करें।

प्रश्न- वानरराज सुग्रीव कहाँ रहते थे?

उत्तर - वानरराज सुग्रीव पंपा सरोवर के निकट ऋष्यमूक पर्वत पर रहते थे।

प्रश्न- पंपा सरोवर के पास किसका आश्रम था?

उत्तर - पंपा सरोवर के पास मतंग ऋषि का आश्रम था।

प्रश्न- शबरी कौन थी और वो कहाँ रहती थी?

उत्तर - शबरी मतंग ऋषि की शिष्या थी और वह मतंग ऋषि के आश्रम में ही रहती थी।

प्रश्न- सुग्रीव के बड़े भाई का क्या नाम था?
उत्तर - सुग्रीव के बड़े भाई का नाम बाली था।
प्रश्न- सुग्रीव के प्रमुख साथी कौन थे?
उत्तर - सुग्रीव के प्रमुख साथी हनुमान थे।

* **लघु उत्तरीय प्रश्नोत्तर**

1) लेखक ने राजप्पा के टिकट इकट्ठा करने की तुलना मधुमक्सी से क्यों की?

उत्तर:- लेखक ने राजप्पा के टिकट इकट्ठा करने की तुलना मधुमक्सी की है क्योंकि मधुमक्खी विभिन्न फूलों से रस इकट्ठा करती है उसी प्रकार राज्प्पा ने भी विभिन्न स्थानों और व्यक्तियों से टिकट इकट्ठा कर अपना अलबम तैयार किया है।

2) टिकट-अलबम का शौक रखने के राजप्पा और नागराजन के तरीके में क्या फ़र्क है?

उत्तर:- मधुमक्खी विभिन्न फूलों से रस इकट्ठा करती है उसी प्रकार राजप्पा ने भी विभिन्न स्थानों और व्यक्तियों से टिकट इकट्ठा कर अपना अलबम तैयार किया और नागराजन को उसके मामा ने बना-बनाया अलबम भेज दिया था।

3)अंग्रेज़ों ने भारत के किन–किन क्षेत्रों पर अधिकार कर लिया था?

उत्तर- अंग्रेजों ने भारत के कई हिस्सों पर अधिकार कर लिया था।उनमें से प्रमुख हैं दिल्ली, लखनऊ ,बिहार,नागपुर,तंजौर,सतारा,कर्नाटक,सिंध,पंजाब,मद्रास आदि।

4)झाँसी की रानी के जीवन से हम क्या प्रेरणा ले सकते हैं?

उत्तर- झाँसी की रानी के जीवन से हम देश के लिए मर मिटने, स्वाभिमान से जीने, विपत्तियों से न घबराने, साहस, दृढ़ निश्चय, नारी अबला नहीं सबला है आदि की प्रेरणा ले सकते हैं।

5) वीर महिला की इस कहानी में कौन–कौन से पुरुषों के नाम आए हैं?

उत्तर:- इस कहानी में वीर शिवाजी, नाना धुंधूपंत, पेशवा, तातियाँ, अजीमुल्ला, अहमद शाह मौलवी, ठाकुर कुँवरसिंह, सैनिक अभिराम आदि अनेक वीर पुरुषों के नाम आए हैं।

6)भारतीयों ने अंग्रेजों को दूर करने का निश्चय क्यों किया था?

उत्तर- भारत कई सौ वर्षों तक गुलाम रहा। इस कारण यहाँ के लोग स्वतंत्रता के महत्त्व को भूल गए थे। इस आंदोलन से उन्हें स्वतंत्रता का महत्त्व को समझ में आ गया। उन्होंने यह भी महसूस किया कि फिरंगी धीरे-धीरे अपने साम्राज्य का विस्तार कर रहे हैं। इस कारण भारतीयों ने अंग्रेज़ों को दूर भगाने का निश्चय किया।

7)लेखिका को किस काम से खुशी मिलती है?

उत्तर- लेखिका को प्राकृतिक वस्तुओं को स्पर्श करने में खुशी मिलती है। वह चीज़ों को छूकर उनके बारे में जान लेती है। यह स्पर्श उसे आनंदित कर देता है।

8)मनुष्य का स्वभाव क्या है?

उत्तर- मनुष्य अपनी क्षमताओं की कदर नहीं करता। वह अपनी ताकत और अपने गुणों को नहीं पहचानता। वह नहीं जानता कि ईश्वर ने उसे आशीर्वाद स्वरूप क्या-क्या दिया है और उसका उपयोग नहीं कर सकता है। मनुष्य केवल उस चीज़ के पीछे भागता रहता है, जो उसके पास नहीं है। यही मनुष्य का स्वभाव है।

9)'जिन लोगों के पास आँखें हैं, वे सचमुच बहुत कम देखते हैं' – हेलेन केलर को ऐसा क्यों लगता था?

उत्तर:- एक बार हेलेन केलर की प्रिय मित्र जंगल में घूमने गई थी। जब वह वापस लौटी तो हेलेन केलर ने उससे जंगल के बारे में जानना चाहा तो उसकी मित्र ने जवाब दिया कि कुछ खास नहीं तब उस समय हेलेन केलर को लगा कि सचमुच जिनके पास आँखें होती है वे बहुत ही कम देखते हैं।

10) हेलेन केलर प्रकृति की किन चीज़ों को छूकर और सुनकर पहचान लेती थीं?

उत्तर:- हेलन केलर भोज-पत्र के पेड़ की चिकनी छाल और चीड की खुरदरी छाल को स्पर्श से पहचान लेती थी। वसंत के दौरान वे टहनियों में नयी कलियाँ, फूलों की पंखुडियों की मखमली सतह और उनकी घुमावदार बनावट को भी वे छूकर पहचान लेती थीं। चिडिया के मधुर स्वर को वे सुनकर जान लेती थीं।

* दीर्घ उत्तरीय प्रश्न

1) 'जबकि इस नियामत से ज़िंदगी को खुशियों के इन्द्रधनुषी रंगों से हरा-भरा जा सकता है।' – तुम्हारी नज़र में इसका क्या अर्थ हो सकता है?

उत्तरः- दृष्टि हमारे शरीर का कोई साधारण अंग नहीं है बल्कि यह तो ईश्वर प्रदत्त नियामत है। इसके जरिए हम प्रकृति निर्मित और मानव निर्मित हर एक वस्तु का आनंद उठा सकते हैं। ईश्वर के इस अनमोल तोहफ़े से हम अपना जीवन खुशियों से भर सकते हैं। अत: हमें ईश्वर का शुक्रगुजार होते हुए इसकी कद्र भी करनी चाहिए।

2) सुभद्रा कुमारी चौहान लक्ष्मीबाई को "मर्दानी"क्यों कहती हैं?

उत्तरः– झाँसी की रानी एक महिला होते हुए भी उनमें पुरुषोचित गुण साहस, वीरता, युद्ध कला में निपुणता निडरता आदि गुण विद्यमान थे। उन्होंने युद्ध भूमि में अंग्रेजों के दाँत खट्टे कर दिए थे उनकी वीरता का लोहा भारतवासियों के साथ अंग्रेजों ने भी माना था। अत: सुभद्रा कुमारी चौहान ने लक्ष्मीबाई के इसी अभूतपूर्व साहस, शौर्य तथा वीरता का परिचय कराने के लिए "मर्दानी"शब्द का प्रयोग किया है।

3)कविता में किस दौर की बात है? कविता से उस समय के माहौल के बारे में क्या पता चलता है?

उत्तर- कविता में वर्ष 1857 के प्रथम स्वतंत्रता संग्राम के दौर की बात कही गई है। इस संग्राम में झाँसी की रानी लक्ष्मीबाई ने महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई थी। उस समय के माहौल के बारे में यह पता चलता है कि देश गुलाम था और लोगों के दिलों में देशप्रेम की ज्वाला भड़क रही थी। वे आजादी पाने के लिए लालायित थे।

4) नागराजन ने अलबम के मुख्य पृष्ठ. पर क्या लिखा और क्यों? इसका असर कक्षा के दूसरे लड़के-लड़कियों पर क्या हुआ?

उत्तर- नागराजन के अलबम के मुख्य पृष्ठ पर लिखा था-ए. एम. नागराजन और नीचे की पंक्तियों में लिखा था इस अलबम को चुराने वाला बेशर्म है। ऊपर लिखे नाम को कभी देखा है? यह अलबम मेरा है। जब तक घास हरी है और कमल लाल, सूरज जब तक पूर्व से उगे और पश्चिम में छिपे, उस अनंत काल तक के लिए यह अलबम मेरा है, रहेगा। ऐसा इसलिए लिखा था ताकि उसे कोई चुराने की कोशिश न करे। यह अलबम हमेशा-हमेशा के लिए नागराजन के पास रहे। कक्षा के दूसरे लड़के-लड़कियों पर इसका यह असर हुआ कि उन्होंने इसे अपने अलबम और कॉपी में उतार लिया।

(व्याकरण– विभाग)

1)उपसर्ग की परिभाषा

उपसर्ग उस शब्दांश या अव्यय को कहते है, जो किसी शब्द के पहले आकर उसका विशेष अर्थ प्रकट करता है।

दूसरे शब्दों में- "उपसर्ग वह शब्दांश या अव्यय है, जो किसी शब्द के आरंभ में जुड़कर उसके अर्थ में मूल शब्द के अर्थ में विशेषता ला दे या उसका अर्थ ही बदल दे।" वे उपसर्ग कहलाते है।

अन	-	अनमोल, अलग, अनजान, अनकहा, अनदेखा इत्यादि।
अध्	-	अधजला, अधखिला, अधपका, अधकचरा, अधकच्चा, अधमरा इत्यादि।
उन	-	उनतीस, उनचास, उनसठ, इत्यादि।
भर	-	भरपेट, भरपूर, भरदिन इत्यादि।

दु	-	दुबला, दुर्जन, दुर्बल, दुकाल इत्यादि।
नि	-	निगोड़ा, निडर, निकम्मा इत्यादि।

2)प्रत्यय की परिभाषा

जो शब्दांश, शब्दों के अंत में जुड़कर अर्थ में परिवर्तन लाये, प्रत्यय कहलाते है।

दूसरे अर्थ में- शब्द निर्माण के लिए शब्दों के अंत में जो शब्दांश जोड़े जाते हैं, वे प्रत्यय कहलाते हैं।

प्रत्यय दो शब्दों से बना है- प्रति+अय। 'प्रति' का अर्थ 'साथ में, 'पर बाद में' है और 'अय' का अर्थ 'चलनेवाला' है। अतएव, 'प्रत्यय' का अर्थ है 'शब्दों के साथ, पर बाद में चलनेवाला या लगनेवाला। प्रत्यय उपसर्गों की तरह अविकारी शब्दांश है, जो शब्दों के बाद जोड़े जाते है।

प्रत्यय	**धातु**	**कृदंत-रूप**
आऊ	टिक	टिकाऊ
आक	तैर	तैराक
आका	लड़	लड़का
आड़ी	खेल	खिलाड़ी
आलू	झगड़	झगड़ालू
इया	बढ़	बढ़िया
इयल	अड़	अड़ियल
इयल	मर	मरियल
ऐत	लड़	लड़ैत
ऐया	बच	बचैया
ओड़	हँस	हँसोड़
ओड़ा	भाग	भगोड़ा

3) कारक

(1) कर्ता कारक :- जो वाक्य में कार्य करता है उसे कर्ता कहा जाता है। अथार्त वाक्य के जिस रूप से क्रिया को करने वाले का पता चले उसे कर्ता कहते हैं।

राम ने पत्र लिखा।
हम कहाँ जा रहे हैं।
रमेश ने आम खाया।

(2) कर्म कारक :- जिस व्यक्ति या वस्तु पर क्रिया का प्रभाव पड़ता है उसे कर्म कारक कहते हैं।

- ममता सितार बजा रही है।
- राम ने रावण को मारा।
- गोपाल ने राधा को बुलाया।

(3) करण कारक :- जिस साधन से क्रिया होती है उसे करण कारक कहते हैं। इसका विभक्ति चिन्ह से और के द्वारा होता है।

- बच्चे गेंद से खेल रहे हैं।
- बच्चा बोतल से दूध पीता है।
- राम ने रावण को बाण से मारा।

(4) सम्प्रदान कारक :- जिसके लिए कोई क्रिया काम की जाती है, उसे सम्प्रदान कारक कहते है।

- वे मेरे लिए उपहार लाये हैं।
- माँ बेटे के लिए सेब लायी।
- मैं सूरज के लिए चाय बना रहा हूँ।

(लेखन–विभाग)

* संवाद–लेखन

1) रोगी और वैद्य का संवाद|

रोगी- (औषधालय में प्रवेश करते हुए) वैद्यजी, नमस्कार!
वैद्य- नमस्कार! आइए, पधारिए! कहिए, क्या हाल है ?
रोगी- पहले से बहुत अच्छा हूँ। बुखार उतर गया है, केवल खाँसी रह गयी है।
वैद्य- घबराइए नहीं। खाँसी भी दूर हो जायेगी। आज दूसरी दवा देता हूँ। आप जल्द अच्छे हो जायेंगे।
रोगी- आप ठीक कहते हैं। शरीर दुबला हो गया है। चला भी नहीं जाता और बिछावन (बिस्तर) पर पड़े-पड़े तंग आ गया हूँ।
वैद्य- चिंता की कोई बात नहीं। सुख-दुःख तो लगे ही रहते हैं। कुछ दिन और आराम कीजिए। सब ठीक हो जायेगा।
रोगी- कृपया खाने को बतायें। अब तो थोड़ी-थोड़ी भूख भी लगती है।
वैद्य- फल खूब खाइए। जरा खट्टे फलों से परहेज रखिए, इनसे खाँसी बढ़ जाती है। दूध, खिचड़ी और मूँग की दाल आप खा सकते हैं।
रोगी- बहुत अच्छा! आजकल गर्मी का मौसम है; प्यास बहुत लगती है। क्या शरबत पी सकता हूँ?
वैद्य- शरबत के स्थान पर दूध अच्छा रहेगा। पानी भी आपको अधिक पीना चाहिए।
रोगी- अच्छा, धन्यवाद! कल फिर आऊँगा।
वैद्य- अच्छा, नमस्कार।

2) परीक्षा के एक दिन पूर्व दो मित्रों की बातचीत का संवाद लेखन कीजिए।

अक्षर- नमस्ते विमल, कुछ परेशान से दिखते हो?
विमल- नमस्ते अक्षर, कल हमारी गणित की परीक्षा है।
अक्षर- मैंने तो पूरा पाठ्यक्रम दोहरा लिया है, और तुमने?
विमल- पाठ्यक्रम तो मैंने भी दोहरा लिया है, पर कई सवाल ऐसे हैं, जो मुझे नहीं आ रहे हैं।

अक्षर- ऐसा क्यों?
विमल- जब वे सवाल समझाए गए थे, तब बीमारी के कारण मैं स्कूल नहीं जा सका था।
अक्षर- कोई बात नहीं चलो, मैं तुम्हें समझा देता हूँ। शायद तुम्हारी समस्या हल हो जाए।
विमल- पर इससे तो तुम्हारा समय बेकार जाएगा।
अक्षर- कैसी बातें करते हो यार, अरे तुम्हें पढ़ाते हुए मेरा दोहराने का काम स्वतः हो जाएगा। फिर, इतने दिनों की मित्रता कब काम आएगी।
विमल- पर, मैं उस अध्याय के सूत्र रट नहीं पा रहा हूँ।
अक्षर- सूत्र रटने की चीज़ नहीं, समझने की बात है। एक बार यह तो समझो कि सूत्र बना कैसे। फिर सवाल कितना भी घुमा-फिराकर आए तुम ज़रूर हल कर लोगे।
विमल- तुमने तो मेरी समस्या ही सुलझा दी। चलो अब कुछ समझा भी दो।

3) पुस्तक विक्रेता की दुकान पर किताबें खरीदने आए छात्र और दुकानदार की बातचीत का संवाद लेखन कीजिए।
छात्र -अंकल जी नमस्ते, मुझे किताबें चाहिए।
दुकानदार- नमस्ते बेटा| तुम्हें कौन-सी पुस्तकें चाहिए।
छात्र- मुझे नौवीं की पुस्तकें चाहिए।
दुकानदार- यह लो नौंवीं की पुस्तकों का सेट।
छात्र- अरे| यह बंडल खोलो तो सही।
दुकानदार- इन्हें घर जाकर देखना, ठीक न होगी तो बदल दूंगा।
छात्र- मुझे किताबें यहीं देखनी है। अब बंडल खोलो।
दुकानदार- यह लो देखो।
छात्र- अरे| इनमें तो एक भी किताब एन.सी.ई.आर.टी. की नहीं है।
दुकानदार- पर इनमें उत्तरः भी तो हैं। सारे बच्चे यही पढ़ते हैं।
छात्र- नहीं मुझे तो एन.सी.ई.आर.टी. की पुस्तकें ही चाहिए?
दुकानदार- बेटा इनका दाम कम है और उत्तरः के लिए गाइड भी नहीं खरीदना पड़ेगा।
छात्र- एन.सी.ई.आर.टी. की पुस्तकें देने में आपको क्या परेशानी है?
दुकानदार- यह लो उन्हीं पुस्तकों का सेट और यह रजिस्टरों का बंडल। इनके साथ ये रजिस्टर भी खरीदना होगा।
छात्र- यह तो सरासर अन्याय है। तुम मुझे ठगना चाहते हो। मैं अभी पुलिस को फ़ोन करता हूँ।
दुकानदार- फ़ोन की बात छोड़ो, यह लो पुस्तकें, पैसे दो और जाओ।
छात्र- ये हुई न बात।

(पत्र–लेखन)

1)पर्यावरण में हो रही क्षति के सन्दर्भ में अधिक से अधिक वृक्ष लगाने का निवेदन करते हुए किसी प्रतिष्ठित दैनिक पत्र के सम्पादक को पत्र लिखिए।

424, शालीमार बाग,
दिल्ली।

दिनांक 16 मार्च, 2020

सेवा में,
सम्पादक महोदय,
नवभारत टाइम्स,
दिल्ली।

विषय- अधिक से अधिक वृक्ष लगाने के सम्बन्ध में।

महोदय,
इस पत्र के माध्यम से मैं प्रशासन, सरकार व आम जनता का ध्यान इस ओर आकर्षित करना चाहती हूँ कि वृक्षों की अन्धाधुन्ध कटाई व कारखानों से निकलने वाले धुएँ के कारण पर्यावरण को अत्यधिक क्षति हो रही है। यद्यपि वन महोत्सव के अवसर पर वन विभाग द्वारा वृक्षारोपण कार्यक्रम आरम्भ किया जाता है तथा अनेक वृक्ष भी लगाए जाते हैं, परन्तु उनकी देखभाल नहीं की जाती जिसके कारण पर्यावरण में प्रदूषण का खतरा बढ़ता जा रहा है।

मेरा सभी से निवेदन है कि हम सभी को मिलकर अधिक से अधिक वृक्ष लगाने होंगे जिससे हम पर्यावरण को सुरक्षित कर पाएँगे।

धन्यवाद।

भवदीय
राहुल

3) अपने पिता को फीस शुल्क मांगने के लिए पत्र लिखें|

केन्द्रीय विद्यालय,
विवेक विहार,
नई दिल्ली
दिनांक: .....
आदरणीय पिताजी,
सादर प्रणाम!
आपका पत्र मिला। यह जानकर प्रसन्नता हुई कि घर में सभी सदस्य स्वस्थ हैं। मैं भी यहाँ कुशलतापूर्वक हूँ। बहुत दिनों से घर आने की सोच रहा था। परन्तु परीक्षा परिणाम देखने के लिए रुकना पड़ा। आगे का समाचार यह है कि मेरी परीक्षा का परिणाम आ गया है। आपको यह जानकर अत्यंत खुशी होगी कि मैं अपनी कक्षा में प्रथम श्रेणी में पास हुआ हूँ। मैंने अपनी कक्षा में 95 प्रतिशत अंक प्राप्त किए हैं। मेरे द्वारा किया गया परिश्रम व्यर्थ नहीं गया है। मेरे मित्रों ने भी द्वितीय व तृतीय स्थान प्राप्त किया है। सभी अध्यापक मेरे परीक्षा परिणाम से बहुत प्रसन्न हैं।

मैं अब नौवीं कक्षा में आ गया हूँ। अगले महीने से हमारी नौवीं की कक्षा आरंभ होने वाली है। इसलिए अपनी नई कक्षा के लिए मुझे किताबें, कापियाँ एवं वर्दी खरीदनी है। अध्यापिका द्वारा हमें तीन महीने की फीस भी भरने को कहा गया है। उनके अनुसार जितनी जल्दी हो सके किताबें, कापियाँ एवं वर्दी आ जानी चाहिए। आपने इस महीने के खर्च के जो पैसे दिए थे, वे खत्म होने वाले हैं।
अत: आपसे निवेदन है कि कृपा करके चार हज़ार रुपए का इंतज़ाम कर, डाक द्वारा शीघ्र भिजवा दें। अब पत्र समाप्त करता हूँ। माताजी को प्रणाम कहिएगा एवं सोनाक्षी को प्यार। पत्र अवश्य लिखते रहिएगा। आपके पत्र का इंतज़ार रहेगा।
आपका आज्ञाकारी पुत्र,
अभिषेक